वर्ष-१४ अंक-१
२७ सितम्बर २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

# वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

# ※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

**वैदिक-रवि**
**मासिक**

**वर्ष-१४** **अंक- १**

**२७ सितम्बर २०१७**
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार )
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

**सलाहकार मण्डल**
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

**प्रधान सम्पादक**
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

**सम्पादक**
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

**सह-सपादक**
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

**सदस्यता**
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

**विज्ञापन की दरें**

| | |
|---|---|
| आवरण पृष्ठ २ एवं ३ | ५०० रू. |
| पूर्ण पृष्ठ (अंदर) | -४००रू |
| आधा पृष्ठ (अंदर का) | २५० रू. |
| चौथाई पृष्ठ | १५० रु |

## अनुक्रमणिका

| क्र. | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | अनियन्त्रित दिशा और दशा | ४ |
| २. | स्वामी दयानन्द | ६ |
| ३. | महर्षि दयानन्द सरस्वती | ७ |
| ४. | थोड़ा हंसिए भी | १० |
| ५. | सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम | ११ |
| ६. | धर्म कहता है- क्रोध मत करो | १२ |
| ७. | जीवन पवित्रता व धर्म का एक अंक दान भी है। | १३ |
| ८. | 2 अक्टूबर | १५ |
| ९. | सकारात्मक दृष्टिकोण से देखो | १७ |
| १०. | बुराई का प्रतीक मनोरंजन का साधन बना | १८ |
| ११. | यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म | १९ |
| १२. | आर्य समाज को बदनाम कर रहे हैं, अग्निवेश | २० |
| १३. | आर्य परिवार वैवाहिक जानकारी | २२ |
| १४. | मध्य भारतीय सभा द्वारा झाबुआ आदिवासी क्षेत्र में | २४ |
| १५. | अशोक नगर ग्राम भटोली में वेद प्रचार | २६ |

## अक्टूबर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

| | |
|---|---|
| ■ गांधी जयंती, विश्व अहिंसा दिवस, लाल बहादुर शास्त्री जयंती | २ |
| ■ शरद पूर्णिमा, रानी दुर्गावती जयंती, बाल्मीकि जयंती | ५ |
| ■ वायु सेना दिवस, | ८ |
| ■ विश्व दृष्टि दिवस | ९ |
| ■ राष्ट्रीय डाक दिवस | १० |
| ■ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयंती | १५ |
| ■ विश्व खाद्य दिवस | १६ |
| ■ धनवन्तरी दिवस धनतेरस | १७ |
| ■ दीपावली पर्व,महर्षि दयानंद निर्वाणोत्सव | १९ |
| ■ विश्वामित्र जयंती | २२ |
| ■ संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस, गुरू गोविन्द सिंह जयंती | २४ |
| ■ गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती | २६ |
| ■ संत नामदेव जयंती, कवि कालीदास जयंती, सरदार पटेल जयंती, इंद्रिरा गांधी पुण्य तिथि | ३१ |

**पत्रिका में प्रकाशित विचार,सामग्री से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।**
**किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।**

सम्पादकीय :

## अनियन्त्रित दिशा और दशा

आज के पहले नियन्त्रण शब्द की गंभीरता पर कभी गहराई से विचार नहीं किया था। न जाने कैसे इस पर वैचारिक सूई आकर ठहर गई और वैचारिक मंथन प्रारंभ हो गया।

सोचने पर पर लगा यह एक शब्द ही इतना बड़ा कारण है जिसके आस पास सारी दुनिया है और सारी दुनिया इससे प्रभावित हो रही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता ह यह सार्वभौमिक है, सार्वकालिक है, सदा के लिए है, सबसे के लिये है।

इसकी प्रासंगिकता व्यक्ति से लेकर विश्व तक है, छोटे से निर्माण से लेकर जल, थल, नभ तक है।

नियन्त्रित प्रत्येक वस्तु प्रत्येक विचार, प्रत्येक व्यक्ति लाभप्रद होता है। अनियन्त्रित कोई भी बात कोई भी कार्य, कोई भी वस्तु हानिकारक होती है। आज चहुंओर अनियन्त्रित दृश्य व परिवेश दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

नियन्त्रण का भाव – संयम से समझ सकते हैं संयम और सरल करें तो उसे सीमा या मर्यादा से समझा जा सकता है। अब इस लेख का लिखने का उद्देश्य पाठकवृन्द के समक्ष कुछ स्पष्ट हो चुका है ऐसा मैं मानता हूँ।

संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिये नियन्त्रण का कितना महत्व है, इस पर थोड़ा विचार करते हैं। जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र जो आपकी जिन्दगी आबाद कर सकता है और उसकी उपेक्षा से बरबाद हो सकता है वह शब्द है नियन्त्रण। एक व्यवहार आपको सुख, शान्ति, आनन्द की अनुभूति दे सकता है वही न होने पर आपके दुःख अशान्ति का कारण भी बन सकता है।

जैसे बहुत आरामदायक सर्व सुविधा युक्त बहुत तेज गति वाला वाहन आपकी यात्रा सफल बनाते हुए समय की बचत और शारीरिक सुख प्रदान कर सकता है। किन्तु यह तभी संभव है जब उस पर नियन्त्रण करने की कोई व्यवस्था हो। यदि वाहन नियन्त्रण में चलता रहे तो उसका लाभ है अनियन्त्रित वाहन जीवन भी नष्ट कर सकता है। कितना भी कीमती वाहन हो उसका महत्व गति पर नियन्त्रण व्यवस्था से ही है।

समुद्र जीवन दाता ह, बादलों को पानी देता है, बादल वर्षा कर प्राणीमात्र को जीवन देता है। पानी से ही वन, वनस्पति, अन्न सबकुछ है इसलिये समुद्र प्राण का बड़ा आधार है। अनेक व्यक्ति समुद्र की इसी महानता के कारण उसकी पूजा करते हैं, हाथ जोड़ते हैं, उसके प्रति पवित्र आदरभाव रखते हैं।

समुद्र में अथाह जल है परन्तु नियन्त्रित है। अनेक शहर समुद्र के मध्य बसे हुए है किन्तु समुद्र से कोई खतरा उन्हें नहीं होता। किन्तु जब वही समुद्र अनियन्त्रित हो जाता है तो सुनामी का रूप लेकर काल बनकर सबकुछ तबाह कर देता है।

अग्नि जीवन है बिना अग्नि के जीवन व जीवन की आवश्यकताओं की कल्पना भी करना व्यर्थ है। प्रत्येक प्राणी के भीतर अग्नि तत्व है कम हो जावे तो

और बढ़ जावे तो वह हानिकारक है। नियन्त्रित तत्व ही जीवन रक्षक व लाभदायक है।

नियन्त्रित अग्नि से हवन होता है, भोजन बनता है, वस्तुओं का निर्माण होता है किन्तु वही अग्नि अनियन्त्रित होकर भयंकर आग के रूप में परिवर्तित हो जावे तो ?

चारों ओर तबाही मचा देती है। प्राणीमात्र का नदियां जीवन है। परन्तु अनियन्त्रित हो जाने पर भयंकर बाढ़ का रूप धारण कर लेती है लाखों व्यक्ति बेघर बार हो जाते हैं, पानी में बहकर उनका जीवन अन्त हो जाता है।

इसी प्रकार यह मनुष्य जीवन भी, इसे यदि नियन्त्रित रखा तो यह अनेक आपदाओं से, परेशानियों से, क्लेशों से, भय से, शारीरिक व मानसिक बीमारियों से मुक्त रहेगा।

हमारे शास्त्रों में विद्वान, पूर्वजों ने इन सब पर गहन विचार उपदेश के रूप में हमें दिये हैं। किन्तु समाज आज उनकी उपेक्षा कर सारी सीमायें तोड़ते हुए अनियन्त्रित हो रहा है। हम क्या खाते हैं, कितना खाते हैं, कब खाते हैं कब उठते हैं कितना सोते हैं इसकी कोई सीमा नहीं।

धन सम्पत्ती एकत्रित करने की कोई सीमा नहीं। जब सोने, जागने, खाने पीने की सब स्थिति अनियन्त्रित हो जावेगी।

परिणाम कि चिन्ता बिना पूरी दिनचर्या अस्त व्यस्त हो जावेगी।

इसलिये, उपदेश दिया अरिग्रह का, इसलिए उपदेश दिया सन्तोष धन का इसीलिए उपदेश दिया जितेन्द्रिय बनने का, अनियन्त्रित जीवन बन्धनों में उलझा देता है वहीं नियन्त्रित, संयमित जीवन सुगमता, सरलता, सफलता प्रदान करता है।

किसी ने ठीक लिखा – **हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें। दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।**

ये मन बड़ा चंचल है, जीवन को यही नियन्त्रित या अनियन्त्रित करता है। कठोपनिषद में इसे – **"आत्मानां रथिनं विद्धि शरीर रथ मेवतू, बुद्धितू सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहं मेवच।।"**

अर्थात् – आत्मा यात्री, शरीर वाहन, बुद्धि चालक और मन नियन्त्रण करने वाली लगाम है।

इस मन को नियन्त्रित कर लिया तो जीवन मुक्ति और नहीं किया तो बन्धन में डाल देगा। योगीराज श्री कृष्णजी के अनुसार – **मनएव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।**

इसलिए अनियन्त्रित विचार, इच्छायें, सग्रह प्रवृत्ती से आज व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व दुःख, चिन्ता, भय की आग में जल रहा है।

नियन्त्रण ही सामाजिक संविधान है, नियन्त्रण ही धर्म का सन्देश है।

# स्वामी दयानन्द –

**धर्म** : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसे धर्म कहते हैं।

**स्वर्ग** : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।

**नरक** : जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह नरक कहलाता है।

**अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।**
**अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।**

**अर्थात्** : हे सर्व भयहर्ता परमात्मन्। मित्र से हमें अभय (अर्थात् भय से अन्य फल) शत्रु से अभय ज्ञात शत्रु तथा अज्ञात् शत्रु से अभय हो, रात्रि तथा दिन में अभय हो। सब दिशाएँ हमारे लिये हितकारिणी होवें।

## सद्गुणों की महत्ता :

**गुणैरूत्तमतां यान्ति नोच्चैरासन संस्थितैः।**
**प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरूड़ायते।।** चाणक्य नीति

**अर्थात्** : गुणों से ही मानव महान होता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।

**अद्यैव कुरू यच्छ्रेयो मा त्वां कालोऽत्यगादयम्।**
**न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।**

महाभारत शांतिपर्व 164–14

भावार्थ : जो उत्तम कार्य करना हो, वह आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाय। मृत्यु इस बात की प्रतिक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूरा किया है या नहीं।

# महर्षि दयानन्द सरस्वती

– *प्रकाश आर्य, महू*

भारत भूमि प्राकृतिक सम्पदा सम्पन्न, महापुरूषों से गौरवान्वित और वर्तमान संसार की प्रथम संस्कृति से जुड़ी हुई है।

यहां जन्में अनेक महापुरूषों के ज्ञान का प्रकाश संसार में फैला और आज भी फैलता जा रहा है। यह ज्ञान चाहे आध्यात्म के रूप में, दर्शन के रूप में या अन्य सामाजिक कार्यों के कारण हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की गणना भी एक महान विद्वान, समाज सुधारक एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रणेता के रूप में की जाती है। यद्यपि आज बहुत से व्यक्ति महर्षि की जीवनगाथा से अनभिज्ञ हैं कई तो स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द को एक ही मान बैठते हैं।

महर्षि का जीवन चरित्र पढ़ने पर पता लगता है कि इस महान विभूति न किस प्रकार के कार्य किये।

वेद, जिन्हें धर्म गुरूओं ने विद्वानों ने धर्म का आधार माना था उसे यह समाज भूल चुका था। तरह–तरह की कपोल कल्पित गाथाएं जोड़ दी गई थी और उन्हें लुप्त होना बताया। पाताल में उन्हें जाना बता दिया था। कुछ विदेशी इन वेदों को गड़रियों के गीत के समान उपमा देते थे। किन्तु आदि शंकराचार्य के पश्चात एकमात्र स्वामी दयानन्द ने पुरूषार्थ कर वेदों के महत्व को समाज के समक्ष रखा। वेदों का महत्व समझाते हुए परमात्मा के इस ज्ञान की पूर्णता, सार्थकता और सत्यता पर गिरा हुआ परदा हटाकर भटकी हुई संस्कृति को पुनः सत्य पथ का दर्शन करा दिया।

संसार के महापुरूषों ने किसी असत्य मान्यता का पाखण्ड का, सामाजिक बुराईयों का खुलकर विरोध नहीं किया वे अपनी बात कहते गये, जमाना सुनता गया। इस कारण समाज में उनका विरोध नहीं हुआ। किन्तु महर्षि का विचार अपना था। वे मानते थे जब तक गलती का एहसास नहीं होगा उन्हें उससे हटाया नहीं जावेगा। तब तक सत्य काअसर होना संभव नहीं है। जैसे किसी पुराने खण्डहर के मस्थान पर नया भवन बनाना हो तो पहले की बेकार सामग्री हटाना पड़ेगी तभी नए भवन का निर्माण संभव है। इस कारण महर्षि ने समाज में व्याप्त पाखण्ड, सामाजिक बुराईयों का खण्डन किया और उन्हें सनातन धर्म की मान्यता के विरूद्ध बताया। इस कारण ऐसे अनेक व्यक्ति जो इन बुराईयों में लिप्त थे, पाखण्ड फैलाकर अपने स्वार्थ सिद्धी करने में लगे थे वे स्वामी दयानन्द के विरोधी हो गए अनेक बार उनकी अव्हेलना और अपमान किया और प्राणघातक हमले तक किये।

किन्तु सत्य का दिवाना ईश्वर सन्देश फैलाने की धुन में व्यस्त समाज सुधार की धुन का पक्का, फक्कड़ वीर सन्यासी इन प्रहारों से रूका नहीं, हटा नहीं, घबराया नहीं वरन् उसके कार्य में और तेजी तथा दृढ़ता नित्य बढ़ती गई और आज जमाना उन सब कार्यों को मानता है कर रहा है, जिसके लिये महर्षि ने शंखनाद किया था। संक्षेप में एक नजर उन कार्यों पर डालें जो महर्षि ने प्रारंभ किये थे।

बाल विवाह गलत है, सतिप्रथा गलत है, जन्म से नहीं अपितुं कर्म से वर्ण या जाति को मानना चाहिए, छुआछूत एक अपराध है, विद्या प्राप्त करना सबका अधिकार है, बलि प्रथा अधर्म है, जीवित माता–पिता की सेवा, सन्तुष्टि ही सच्चा श्राद्ध है, तर्पण है, स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है। परमात्मा एक है, सबकुछ परमात्मा की कृपा से प्राप्त है, परमात्मा ही सर्वोपरि है। निरंकार है, अजन्मा है, सर्वव्यापक है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए आदि अनेक विचार महर्षि ने समाज को दिए, जिनमें अधिकांश पर आज कानून बन गया।

समाज सुधार के कार्यों के साथ–साथ महर्षि ने आध्यात्म के मूल से समाज को जोड़ने का प्रयास किया। देश के अनेक राजा उनके शिष्य थे, जिन्हें महर्षि ने धर्म शिक्षा प्रदान की। महर्षि का यह विचार था कि यदि राजा सुधर जावे तो उसका प्रभाव प्रजा पर अवश्य होगा।

दुनिया ने कहा आगे बढ़ो परन्तु महर्षि दयानन्द का नारा था **"वेदों की ओर लोटो"**

महर्षि का ही सद्प्रयास कहा जायेगा जिसके कारण आज गायत्री मन्त्र, यज्ञ, यज्ञोपवीत व वेद पाठ जन साधारण द्वारा अपनाने के लिये हो गए अन्यथा केवल जाति विशेष परिवार में जन्म लेने वालों को ही इन्हें अपनाने का एकधिकार था। महिलाओं को वेद पढ़ने व शिक्षा पर तो बहुत बड़ी पाबन्दी थी किन्तु महर्षि के प्रयास से इन अज्ञानमयी मान्यता का अन्त हुआ और संसार में पहला कन्या गुरूकुल व पहली कन्या पाठशाला महर्षि के अनुयायी आर्य समाज के समर्थकों ने प्रारंभ की। आज संसार में अनेक देशों में वेद पाठी विद्वान जाकर सनातन धर्म प्रचार कर रहे हैं। यह महर्षि की ही कृपा है।

महर्षि के ही प्रयास का परिणाम है नारी जाति को शिक्षा के प्रति सहयोग प्रोत्साहन आज नारी शक्ति समाज, आध्यात्म व राजनीति के क्षेत्र में शीर्ष स्थानों पर पहुंच रही है।

भारत की स्वतन्त्रता में महर्षि का अद्भुत अनूठा योगदान है। मंगल पाण्डे की योजना से जब ब्रिटिश साम्राज्य 1957 की क्रान्ति से घबराया तो उसने बड़ी समझदारी से भारतीय अंग्रेज हुकुमत के लिये मानसिक रूप से सौहार्दता व सहयोग का वातावरण निर्मित करने की चाल चली।

ब्रिटिश गव्हरमेंट द्वारा एक फरमान जारी किया गया कि हमने अपने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को यह आदेश जारी कर दिये हैं कि किसी भी भारतीय को उसके धार्मिक कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यक्रमों में कोई रूकावट न डालें। जो ऐसा करेगा वह अधिकारी दंडित किया जावेगा। आगे कहा आप सब भारतीय अपने–अपने कार्यों के लिये स्वतन्त्र हैं।

हमें तो परमात्मा ने इस देश की सुख शान्ति व समृद्धता के लिये भेजा है। कुछ दिनों में हम यहां सुख शान्ति का वातावरण निर्मित करेगें प्रत्येक को आर्थिक रूप से सम्पन्न कर देगें आप हमारा सहयोग करें।

इस घोषणा से भारतीय अंग्रेजों के प्रति सद्भावना रखने लगे भारतीयों की स्वतन्त्रता की भावना को ठण्डा करने में अंग्रेल सफल होते दिखने लगे।

तभी महर्षि ने यह सन्देश दिया विदेशी राजा कितना भी कृपा करने वाला क्यों न हो पर स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता।

महर्षि के अंग्रेजी हुकूमत में ऐसे प्रचार से जो एक बड़ी हिम्मत का कार्य था। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने देहली की आम सभा में महर्षि के इस शौर्यपूर्ण कार्य की प्रशंसा की तथा स्वराज्य की ऐसी पहली घोषणा बताया।

महर्षि को अंग्रेज बागी फकीर के रूप में पुकारते थे। महर्षि ने स्वराज्य के लिये सन् 1960 में लगभग प्रयास तेजी से प्रारंभ किये। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई भी महर्षि के सम्पर्क में आये। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, काकोरी काण्ड के प्रमुख पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, मदनलाल ढ़ींगरा, वीर सावरकर महान के गुरू पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक क्रान्तिकारी व स्वतन्त्रता संग्राम के नेता महर्षि के विचारों से प्रभावित हुए और माँ भारती की आजादी में बलिदानी इतिहास के नायक बने।

इसीलिए तो डॉ. पटटाभिसीतारमैया ने कांग्रेस का इतिहास लिखते समय लिखा देश की आजादी में बहुत बड़ा भाग आर्य समाज के अनुयायियों का है।

महर्षि का कार्य समाज के लिए प्राणीमात्र के लिये सत्य सनातन धर्म के लिये व राष्ट्र के लिये था। इसका विरोध खूब हुआ। 16 बार जहर पान करना पड़ा और अन्त में दुष्टों की योजना से जहरपान से रूग्ण अवस्था में जीवन मृत्यु से जूझते हुए दीपावली अमावस्या की काली रात्रि में देहत्याग कर अमरत्व को प्राप्त किया।

ऐसे निष्काम कर्मयोगी को बार–बार नमन्। उनके चरणों में पुष्पांजलि अर्पित।

**उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया**
**जिनके खूं से जले चिरागे वतन।**
**आज जगमगाते मकबरे उनके**
**जिन्होंने बेचे थे शहीदे कफन।।**

---

स्वास्थ के लिए

# थोड़ा हंसिए भी

0 संतासिंह और बंतासिंह दोनों बहुत बड़े दुश्मन थे। ये दोनों एक ही बिल्डिंग में रहते थे। बंतासिंह सातवें माले पर रहता था और संतासिंह पहले। एक बार बिल्डिंग की लिफ्ट खराब हो गई। बंतासिंह ने सोचा कि आज संतासिंह को सबक सिखाया जाए। उसने संतासिंह को फोन करके खाने पर बुलाया। बेचारा संतासिंह जैसे तैसे सातवें माले पर पहुंचा और वहां जाकर देखा कि दरवाजे पर ताला लगा है और लिखा था कि कैसा उल्लू बनाया। संतासिंह को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। उसने उस नोट के नीचे लिखा ''मैं तो यहां आया ही नहीं था''

0 एक सरदार जी एक 25 मंजिला भवन की छत पर बैठे थे, तभी एक आदमी हांफता हुआ आया और कहने लगा कि संतासिंह आपकी पोती मर गई। सरदारजी ये खबर सुनकर बहुत हताश हो जाते हैं और बिल्डिंग से कूद पड़ते हैं। जब वो 20 वीं मंजिल तक पहुंचते हैं तो उन्हें ख्याल आता है कि उनकी तो कोई पोती ही नहीं है। 10 मंजिल आने पर ध्यान आता है कि उनकी तो शादी ही नहीं हुई है और जैसे ही जमीन पर गिरने वाले होते हैं कि ख्याल आता है कि उनका नाम तो संतासिंह है ही नहीं।

# सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम

जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।
समय चक्र घूमकर उस बिन्दू के सामने आता है।
पूरा चक्र लगाने के पूर्व जहां से वह जाता है।।
इतिहास भूलों से बिखरता और सजगता से संवरता है।
इसे मापदण्ड मानकर चलते जो उन्हें धोखा नहीं होता है।।
इसलिए स्वर्णिम इतिहास हो, या सुलझे विचार।
दोनों को ही बनाएं सीख का आधार।।
बड़े बूढ़े ऋषि–मुनियों ने हमें यही समझाया।
नहीं दूजा वेद ज्ञान सा, जग में, यह बतलाया।।
क्योंकि वेद सनातन है, पूर्ण और है पवित्र।
ज्ञान भी उसका जो है यत्र–तत्र–सर्वत्र।।
अमृत कलष से भरा है यह वेद ज्ञान।
योगेष्वर कृष्ण और मानते थे श्रीराम।।
पर, हमने जीने का ढ़ंग कुछ और अपनाया है।
प्राचीन संस्कृति और सीख को जिसमें भुलाया है।।
भौतिक सुख–षान्ति के वातावरण में।
आधार शून्य बाहरी आवरण में।।
जिसे नवीनता की निषानी मान रहे।
मानो अमृत छोड़ गरल पान पा रहे।।
आज मनुष्यता बिखरते जा रही।
दुनियां सिमिटती जा रही।।
पर हम हैं कि पाष्चात्य और पषु सभ्यता में ही लिप्त हैं।
बाहरी सुखों से ही बस तृप्त हैं।।
परन्तु, अज्ञान से भरी ये मानसिकता दुःख की निषानी है।
दुःख भोगना होगा, यदि कीमत अतीत की न जानी है।।
इसलिए अभी भी वक्त है संभल जाओ।
क्योंकि, अतीत और वर्तमान में दूरी न बढ़ाओ।।
जब–जब बड़ों की सीख हमने नहीं मानी।
तब–तब सदा उठाना पड़ी है हमें हानी।।
इसीलिए धर्म शास्त्र प्रणेता मनु ने समझाया।
**''सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्''** बतलाया।।

– **प्रकाश आर्य, महू**

# धर्म कहता है – क्रोध मत करो

मेजर रत्तनसिंह यादव (सेवानिवृत्त) जखाला

संसार के कुछ महान विचारकों ने हमारे लिए विचारों के माती चुनकर सुरक्षित रख छोड़े हैं। हमारी बुद्धिमत्ता इसी में है कि मोतियों की इस माला से अपनी तथा दूसरों की शोभा बढ़ायें। हमारे शास्त्रों में भी षट्शत्रुओं में क्रोध को दूसरा शत्रु माना गया है। आइये जानें कि इस शत्रु के विषय में विभिन्न विचारकों ने क्या कहा है –

1. क्रोध क्षणिक पागलपन है।

2. कोई भी व्यक्ति क्रोधित हो सकता है यह बहुत आसान है। परन्तु उचित व्यक्ति के साथ, उचित मात्रा में, उचित समय पर, उचित कारण से तथा उचित प्रकार से क्रोधित होना सबके बस का नहीं है और यह आसान नहीं है। (यूनानी दार्शनिक अरस्तु)

3. अपने क्रोध पर नियन्त्रण करो, नहीं तो यह आप पर नियन्त्रण कर लेगा। (Horac Epistles)

4. आप उस व्यक्ति पर क्रोधित क्यों हो रहे हो, जो आप पर क्रोध कर रहा है ? इस क्रोध से आप को क्या मिलने वाला है ? आपका शारीरिक क्रोध आपकी विचार शक्ति भंग करेगा। यह कैसे हो सकता है कि आपके घर में लगी आग आपका घर जलाने से पहले दूसरे का घर जला दे। (Basvanand)

5. क्रोध बुद्धि के दीपक को बुझा देता है।

6. क्रोध प्रेम को विलीन कर देता है। अतः मनुष्य को क्रोध के स्थान पर क्षमा को धारण करना चाहिए। (Samana Suttam)

7. गम्भीर तथा गहन प्रश्नों की परीक्षा में प्रत्येक को शान्त, स्थिर चित्त तथा धीरे बोलना चाहिए। (Ingersole)

8. उबलते जल में हम अपनी परछाई नहीं देख सकते, इसी प्रकार क्रोध की अवस्था में सत्य नहीं देखा जा सकता।

9. यदि छोटी छोटी बातें आपको क्रोधित कर सकती हैं तो क्या ये आपके छोटे कद की ओर संकेत नहीं कर रही ? (Sydaney Harris)

10. आपके लिए यह सम्भव नहीं है कि एक ही समय में आप क्रोध करें या हंसे। परन्तु दोनों में से किसी एक को चुनना आपके लिए सम्भव है।

11. क्रोध का भोजन विवेक है।

(Wayne Dyer)

[illegible] [illegible] नामक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] की विशिष्टता बताई है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] अपना रूप बताया है —

जब मैं किसी जीव के पास जाता हूँ तो संसार का अच्छा और बढ़िया कर देता हूँ। [illegible] और [illegible] जीव को भी मैं [illegible] [illegible] कर पैदा करता हूँ। मेरे आने पर जीव अपने कर्तव्य को भूल जाता है और अपने हित की बात भी नहीं सोच पाता। जब मैं उत्तेजक होता हूँ तो बुद्धिमान जीव अपने [illegible] स्थान का भी [illegible] नहीं कर पाता।

अतः जीव को चाहिए कि [illegible], [illegible] और [illegible] का सेवन [illegible] है, इसी में अपना और दूसरों का कल्याण है।

— साभार **सुधारक**

---

## जीवन पवित्रता व धर्म का एक अंग दान भी है।

## दान की महिमा

वैसे तो विद्या का दान करना श्रेष्ठ कहलाता है परन्तु विद्या प्राप्ति में विशेष सहायक अन्न का दान करना उससे भी उत्तम है। क्योंकि भूखे पेट रहकर विद्या प्राप्त करना भी कठिन है।

अन्न के उपयोग से शरीर में जीवन का संचार होता है, शरीर में जीवन रहने पर ही [illegible] [illegible] में समर्थ हो सकता है इसीलिए संस्कृत साहित्य में अन्न की महत्ता बताते हुए कहा है —

**अन्नं वै प्राणाः, अन्नं बहु कुर्वीत, अन्नं न निन्द्यात्।** अन्न ही [illegible] से प्राणों का आधार है अतः अन्न का उत्पादन अधिक मात्रा में करना चाहिए। अन्न की निन्दा नहीं करनी चाहिए।

आजकल विवाह, जन्मोत्सव तथा इसी प्रकार के सार्वजनिक भोजों में अन्न का बहुत दुरुपयोग होता देखा गया है। लोग जिह्वा के वशीभूत होकर अधिक खाद्य पदार्थ ले लेते हैं, पेट में स्थान रहता नहीं ऐसी अवस्था में झूठा भोजन कूड़ादान में डाल देते हैं। उन्हें सोचना चाहिए कि निमन्त्रणदाता [illegible] ने कितना धन खर्च करके आपके लिए [illegible] प्रकार के रसों से युक्त विविध व्यंजन बनवाए

हैं और आप उन्हें इस प्रकार नष्ट कर रहे हैं। जहाँ सहस्त्रों व्यक्ति रात को भूखे पेट सोते हैं, वहां भोज समारोह में अन्न का दुरूपयोग करना पाप कामना है।

गुरूकुल, गोशाला, अनाथालय आदि के लिए कृषक लोग अपना धर्म समझकर अन्नादि का दान करते हैं, ऐसे व्यक्ति पुण्य के भागी होते हैं। ऐसे सज्जनों द्वारा दिये गये दान से विद्यार्थी विद्या प्राप्त करके अपना जीवन तो सफल करते ही हैं, पढ़ने के पश्चात भी देश सेवा हेतु अपना जीवन लगा देते हैं। अतः दानी द्वारा उचित स्थान पर दिया गया दान उत्तम फलदायक सिद्ध होता है। जो व्यक्ति निठल्ला रहकर धर्म नहीं करता, परन्तु धर्म के नाम पर दान लेकर उसका शराब, आदि नशे में दुरूपयोग करता है, ऐसे व्यक्ति को दिया गया दान भी दानी को अधोगति को प्राप्त कराता है, अतः दान भी समझ कर दिया जाना चाहिए।

तैत्तिरीयोपनिषद् **में** लिखा है –

**श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देवम्, श्रिया दयम्। हिया देयम्। संविदा** देयम्।

सत्कर्म हेतु दान अवश्य देना चाहिए। चाहे श्रद्धा से दे, अश्रद्धा से दें, शोभा के लिए दे, किसी के द्वारा लज्जित किये जाने पर दें, और प्रतिज्ञा करके भी देना चाहिए। भाव यह है कि कोई भी अवस्था ही दान अवश्य देना चाहिए। कुछ व्यक्ति सामर्थ्य न होने पर ऋण लेकर भी दान करते हैं। अतः अपने और सचमुच की उचित आवश्यकता वाले लोगों के कल्याण के लिए दान अवश्य करना चाहिए।

– साभार सुधारक

दिया हुआ दान अर्जित धन को उसी प्रकार पवित्र करता है जैसे मटमैले पानी में थोड़ा सा फिटकरी का टुकड़ा डाल देने से पानी स्वच्छ हो जाता है। योगीराज श्रीकृष्णचन्द्रजी ने भी इसका महत्व बताते हुए कहा –

"यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानी मनुष्याणाम्।"

यज्ञ, दान और तप से मनुष्य जीवन पवित्र होता है।

# 2 अक्टूबर

दो अक्टूबर का दिन कितना महान हैं,
इससे जुड़ा शास्त्री और गाँधी का नाम हैं।
साल भर में एक बार इन्हें भी याद करते हैं,
जैसे श्राद्ध पक्ष में पितरों के नाम भोजन धरते हैं।
बदले जमाने में इनका अब क्या काम हैं,
अब तो जी हुजुरी ही राजनीति का नाम हैं।
खुद का कद बढ़ाने के लिए अब आदर्श खोना जरूरी हैं,
इनको भुला देना ही सफल नेता की मजबूरी हैं।
फिर भी दोगले ना कहलावें इसलिए इन्हें याद करते हैं,
एहसान फरामोश न कहलाए इसलिए भी डरते हैं।
इनके विचार इतिहास बन कर रह गए,
वर्तमान परिपेक्ष्य में जाने कहां ढ़ह गए।
समय के साथ नीति में भी बदलाव आया हैं,
सेवा, भक्ति की जगह व्यापार ने स्थान पाया हैं।
इसलिए बदले नजरिये में लाभ – हानि देखना पड़ता हैं,
सत्य, ईमानदारी पर चलने से आज हर नेता डरता हैं।
अब एक नया इतिहास राजनीति बनाती जा रही,
पारस बनी, इसीलिए गरीबी हटाती जा रही।
राजनीति ने कई सड़कछापियों को कोठी तक पहुँचाया हैं,
रातों रात बनी तकदीर में कमाल देखने में आया हैं।
इसलिए बापू हो चाहे बहादुर,
एक ही नारा चल रहा सब दूर ।
फोटू तो हम दोनों की ही टांगेगे,
पर ग्यारन्टी नहीं की हम उनकी मानेंगे।

हमें तो वर्तमान और अतीत दोनो को देखना हैं,
जले किसी का घर हमे तो रोटी सेकना हैं।
कल दोनो नेताओं की स्टेच्यू पर हार पहनावेगें,
दूध और पानी से नहलावेगें।
कल के लिए सुन्दर भाषण तैयार किया हैं,
जिसमे वर्तमान स्थिति पर जमकर वार किया हैं।
जनता को मोहने का यही तो मन्त्र हैं,
बनी रहे मूर्ख जनता, वही प्रजातन्त्र हैं।
कल दिन भर का व्यस्त कार्यक्रम बना हैं,
हम भी पापुलर हो जावे ऐसे स्टेच्यू का सपना हैं।
लगता हैं हम इसे जरूर कर पावेंगे,
करनी कुछ भी हो पर हमी पुजावेगे।
कुर्सी यहां सब पर भारी हैं,
बन्धे रहना इससे लाचारी हैं।
इसलिए मन पर दिलो दिमाग पर इसका प्रभाव हैं,
फिर इस समाज में दूर दृष्टि का अभाव हैं।

इसलिए चालाक इसका लाभ उठाते हैं,
जुर्म करके भी वे सम्मान पाते हैं।
सभी अपनी धुन में हैं मस्त वे देश की न सोचते हैं,
इसीलिए दूध की रखवाली बिल्ली को सौपते हैं।
होता अब कागजी सम्मान है।
दो अक्टूबर का दिन कितना महान है।।

**– प्रकाश आर्य, महू**

बोधकथा

# सकारात्मक दृष्टिकोण से देखो

"व्यक्ति को नकारात्मक नहीं सकारात्मक सोचना चाहिए, क्योंकि नकारात्मक सोच नकामयाबी की ओर, नाकामयाबी निराशा की ओर तथा निराशा का परिणाम मूर्खता होता है।" – **लेखक**

एक कस्बे में एक धनवान सेठ रहा करते थे। उनके दो नन्हें पुत्र थे। एक दिन उस सेठ ने अपने एक खास नौकर को बुलाकर कहा – तुम मेरे दोनों बेटों को गरीब बस्ती में ले जाओ, ताकि मेरे लाड़ले यह देख सके कि गरीबी क्या चीज होती है।

वह नौकर सेठ के दोनों बेटों को गरीब बस्ती में ले गया और वहां सारा दिन बिताने के बाद वापस घर ले आया।

दूसरे दिन उस सेठ ने अपने दोनों बेटों को पास बुलाया और पहले पुत्र से पूछा – बेटा कैसा लगा, उस गरीब बस्ती में समय बिताकर।

पहले लड़के ने जवाब दिया – पिता जी ! गरीबी भयानक होती है। उनके घरों में ना गार्डन है, न तो अच्छा कुत्ता है, उनके घर में स्वीमिंग पुल भी नहीं है। हम लोग वहां होते तो भूख और कष्ट से मर जाते। मैं तो वहां दुबारा नहीं जा सकता।

फिर उस सेठ ने अपने दूसरे बेटे से वही प्रश्न पूछा। तो दूसरे ने कहा – पिताजी, ऐसा जीवन दिखाने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। हम लोगों के पास केवल एक ही कुत्ता है, जबकि उनके पास कई हैं। हमारे घर में तो एक छोटा सा स्वीमिंग पुल ही है, जबकि उनके घर के पीछे तो पूरी नदी बहती है। हमारे घर के अन्दर छोटा सा गार्डन ही है, जबकि उनका घर प्राकृतिक गार्डन अर्थात जंगल के बीच में स्वर्ग प्रतीत होता है। वाकई पिताजी, उन लोगों को प्रकृति की अपार सम्पदा मिली है, उस जीवन का अपना ही मजा है। वहां कोई बन्धन नहीं है।

तो क्या तुम्हें अपना घर, रहन–सहन पसन्द नहीं ?

ऐसा नहीं पिताजी, यह बन्धनमुक्त जीवन स्नेह से लबालब है। इसमें अलग ही आनन्द है।

इस कहानी से सीख मिलती है कि, हमें नकारात्मक नहीं सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए। एक ही चीज को देखने के अलग–अलग तरीके हो सकते हैं, परन्तु हमें हमेशा स्वस्थ और अच्छी दृष्टि से देखना चाहिए।

एक बार सुकरात से एक निराशावादी व्यक्ति मिला और बोला – मैं जिन्दगी से ऊब गया हूं, आत्म हत्या करने का मन करता है। सुकरात का उत्तर था – तेरा मर जाना ही उत्तम है, तू जितनी जल्दी मरे, उतना सबके लिए, तेरे लिए अच्छा होगा, अन्यथा तेरी इस विचारधारा से समाज को बड़ी क्षति होगी।

**एक विचार** – निराशावादी दृष्टिकोण आपके पुरूषार्थ और उत्साह को कमजोर करता है। आशावादी सकारात्मक दृष्टिकोण आपकी कार्यक्षमता और उत्साह की वृद्धि करता है। गुरूदेव दयानन्द का जीवन हमारे लिए एक ऐसी ही प्रेरणा देता है, जिसमें प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बना दिया। एक शायर ने लिखा –

**"आदमी वो नहीं जिसे गर्दिशें हैरान कर दें, आदमी वह है जो गर्दिशें विरान कर दे।**

# बुराई का प्रतीक मनोरंजन का साधन बना

सारे जमाने ने एक बार फिर पुतला जलाया,
रावण बनाने में तन, मन, धन लगाया।

पहले रावण इतना महंगा नहीं बनता था,
साधारण वेश–भूषा में ही वह जलता था।

पर समय के साथ त्यौहार भी बदलते जा रहे हैं,
बुराई के प्रतीक में भी मनोरंजन ला रहे हैं।

ऊँच–नीच, भले बुरे का भेद ऐसे ही मिटेगा,
देख लेना अगली सदी तक रावण ही फैशन में दिखेगा।

इसलिए रावण का कद हर दशहरे पर बढ़ता जा रहा,
बुराई का प्रतिक गगन चुंभी तरक्की पा रहा।

राम वर्षों से पुरानी वेश–भूषा और कद में ही दिखते हैं,
आज की पीढ़ी इस भेद को देख कर यही सीखते हैं।

कि, जमाना बुराई को तरक्की दिलाता है,
राम 6 और रावण साठ फुट का बनाता है।

इसलिए जय भले ही राम की बोले पर हीरो तो रावण है,
नवयुवक के भटकाव का सबसे बड़ा ये कारण है।

जो जैसा था वैसा हमने मानना छोड़ दिया,
बुराई के प्रतीक को भी मनोरंजन से जोड़ दिया।

इसलिए रावण बुराई के प्रतीक रूप में नहीं जलता है,
मनोरंजन का साधन बना ये मेरे मन को खलता है।

प्रदर्शन ने दर्शन को लुप्त कर बदल दी दिशा,
दिन के प्रकाश को ज्यूं मिटा दे आकर निशा।

आगे आने वाली पीढ़ी सबकुछ उलटा समझेगी,
अच्छाई और बुराई के भेद को ही तोड़गी।

इसलिए उद्देश्य समझकर पर्वों को मनाना जरूरी है,
वर्ना पर्वों की सार्थकता ही अधूरी है।

– प्रकाश आर्य, महू (म. प्र.)

# यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

स्वर्ग अर्थात सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, बुद्धि, पूजा, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति आदि की इच्छा करने वाले व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिये। यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घृत के एक बूंद से ही बहुत से परमाणु करोड़ में बनते हैं जो वायु मण्डल में फैलकर पर्यावरण को शुद्ध करते हैं एवं विषैली गैसों को नष्ट करते हैं। यज्ञ कुण्ड से निकलने वाला धुंआ ऊपर पहुंचकर ओजोन परत में बने हुए छिद्रों को बन्द करने में समर्थ होता है, जिसके कारण पराबैगनी किरणें जैसी हानिकारक किरणों के कारण धरती पर फैलने वाले कैंसर, चर्म रोग आदि अनेक बीमारियों से हमारा बचाव होता है। यज्ञ के धुंए से क्षय रोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट होते हैं तथा केसर व चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी नष्ट होते हैं, ये विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डीलिट व फ्रांस के वैज्ञानिक ट्रिलबर्ट आदि की घोषणाएं हैं। यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घी व सुगन्धि और रोग नाशक सामग्री बर्बाद नहीं होती, इसे समझाने के लिए आलंकारिक दृष्टान्त दिया जा रहा है --

एक यजमान ने यज्ञ किया व यज्ञ कुण्ड में घी व अन्य सामग्री की आहूति का दान किया, फलतः दान करके वह देवता कहलाया जबकि अग्नि देवता घी व सुगन्धि व रोगनाशक सामग्री को ग्रहण करने से लेणता बन गयी तब अग्नि कहती है कि यजमान घी व अन्य सामग्री की आहूति दान कर देवता बन गया तो मैं भी देवता हूं, मैं क्यों लेणता बनूं और उसने उस घी व सुगन्धि, सामग्री को वायु को दान कर दिया। वायु कहता है यजमान देवता, अग्नि देवता तो मैं क्यों लेवता बनूं मैं भी देवता बनूं, अतः उसने घी व सुगन्धि सामग्री को बादल, पर्जन्य को दान कर दिया। बादल ने सोचा यजमान, अग्नि, वायु सब देवता हैं तो मैं क्यों देवता नहीं और उसने उस घी व रोगनाशक व सुगन्धि सामग्री को जल को दान कर दिया। जल भी तो देवता है, उसने उस घी व सुगन्धि व रोग नाशक सामग्री धरती माता को दान कर दिया और इस प्रकार धरती में वृष्टि के द्वारा वह घृताहुति नीचे पहुंचाती है। उस घृत युक्त जल से पुनः गेहूं, चावल आदि अन्न उत्पन्न होते हैं और घांस भी उगती है। उस घांस को पुनः गाय खाती है और दूध देती है उसके दूध से पुनः घी बनाया जाता है। इस प्रकार यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घृत की घूमते हुए पुनः घी में बदल जाती है। अतः घी का नष्ट होना मानना सर्वथा गलत है।

**0 अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः** -- अथर्ववेद 9/10/14

यह यज्ञ ही सम्पूर्ण संसार की नाभि (केन्द्र) है।

**0 यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म**

यज्ञ ही सब कार्यों में सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

यज्ञमय जीवन ही हमारा श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है।

-- **कैलाश काका पाटीदार**
आर्य समाज, सुवास

# आर्य समाज को बदनाम कर रहे हैं, अग्निवेश

आर्य समाज मूर्ति पूजक नहीं है लेकिन यह भी सत्य है कि वह मूर्ति भंजक भी नहीं है। यदि किसी सम्प्रदाय या व्यक्ति ने आर्य संस्कृति पर प्रहार किया तो आर्य समाज न केवल उसका विरोध करता है वरन् संस्कृति की रक्षा में संघर्ष भी करता है। किन्तु दुर्भाग्य है तथाकथित अपने को आर्य सन्यासी (नाममात्र के) कहलाने वाले अग्निवेश ने महाराष्ट्र के औरंगाबाद में मुस्लिमों की मजलिस (सभा) में हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाते हुए राम जन्म भूमि और मन्दिर को लेकर बहुत ही बेहूदे ढ़ंग से प्रश्न किये तथा माननीय श्री आड़वाणी जी का मजाक बनाते हुए यह प्रश्न किया कि क्या आड़वाणीजी राम जन्म के समय वहाँ उपस्थित थे, अर्थात राम का जन्म होते देख रहे थे। क्या वह स्थान वही था ? जहां बावरी मस्जिद थी ? क्या वहां कभी मन्दिर था ? मेरा प्रश्न है अग्निवेश (जी) बावरी मस्जिद के निर्माण के समय क्या आप वहां उपस्थित थे ? उन्होंने मन्दिर पर तो प्रश्न उठाया पर उनसे जानना चाहता हूँ कि जिसे वे अपना पिता मानते थे, तो क्या उसके लिए भी प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता है कि वे आपके पिता थे। अग्निवेश (जी) अगर आपकी ऑख में फूला ना हो, आपको स्पष्ट दिखता हो तो पुरातत्ववेत्ता और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व निर्देशक श्री के. के. मोहम्मद द्वारा स्वयं की लिखी आत्मकथा ''न्याय एन्ना भारतीयन'' (मैं एक भारतीय) जो वर्ष 2016 में प्रकाशित हुई, उसमें लिखते हैं कि वर्ष 1976–1977 में कथित बावरी मस्जिद में न्यायालय के आदेशानुसार उत्खनन किया गया, तो मन्दिर के अवशेष दिखे तथा मन्दिर के अवशेषों से ही मस्जिद का निर्माण हुआ था। इतना ही नहीं उत्खनन में मन्दिर के अनेकों स्तम्भ मिले। यदि उत्खनन और होता तो संभव है कि और अधिक प्रमाण भी मिलते, इसका उल्लेख लेखिका ''नायर फोड़कर'' का दैनिक जागरण 5 अप्रैल 2017 के पत्र में प्रकाशित हुआ था।

लेख का पुनः प्रकाशन हिण्डौन सिटी राजस्थान से प्रकाशित वैदिक पथ के माह फरवरी मार्च 2017 में जो माह जुलाई में प्रकाशित किया गया। अग्निवेश (जी) यह तो मन्दिर का स्पष्ट प्रमाण है लेकिन आपके पास आपके पिता का क्या प्रमाण है ?

अग्निवेश (जी) ने यह भी कहा कि यदि न्यायालय उनसे कहे कि ''वन्दे मातरम्'' बोलो तो अग्निवेश ने कहा वे नहीं बोलेंगे। जो व्यक्ति अपनी माता का सम्मान नहीं करता, उसे कृतघ्न कहा जाता है। अग्निवेश आपका शरीर भारत की माटी, अन्न, जल, फूल से पला बढ़ा है और अब भी उसका लाभ ले रहे हैं। हमारी संस्कृति में तीन माताएँ मानी जाती हैं। 1– वेदमाता 2. धरती माता (भारत माता) 3. जन्मदात्री माता इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित न करना कृतघ्नता है। आप अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए मुस्लिम परस्त

साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर देश को हानि पहुंचा रहे हैं। आपके इन्हीं छल छद्मों से न केवल आर्य समाजी किन्तु देश में सभी प्रबुद्ध लोग परिचित हैं। **आर्यजनों को समझना चाहिए, पूर्व में भी ऐसे कारणों से इन्हें आर्य समाज से पृथक किया गया था। पुनः ये और इनके कुछ साथी आर्य होने का स्वांग बनाकर आर्य समाज को भ्रमित कर क्षति पहुंचा रहे हैं।**

**भगवानदास अग्रवाल**
भूतपूर्व उपप्रधान
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

---

# आर्य परिवारों की जानकारी

अनेक छोटे–छोटे से संगठन सम्प्रदायों के पास उनके सदस्यों के परिवार की संख्या की पूरी जानकारी होती है। इससे उनका सम्पर्क सदस्यों से और उनके परिवारों से बना रहता है।

आर्य समाज में यह नहीं हो पाया, इससे हम परिवारों से उनके सदस्यों से जुड़ नहीं पाते हैं। कई बार किसी आर्य परिवार के सदस्य प्रायः जो किसी विभाग में सेवारत हैं वे हमारे शहर में आकर रहने लगते हैं किन्तु हमारा उनसे सम्पर्क ही नहीं हो पाता है या कभी–कभी जब वे पुनः कहीं स्थानान्तरित होकर जाते हैं तब आखरी समय पता चलता है कि अरे, ये तो आर्य परिवार से है।

इसके साथ–साथ एक और क्षति हो रही है विवाह योग्य बच्चों की जानकारी ही नहीं हो पाती है। हमारे संगठन को इससे बहुत शक्ति मिल सकती है जब आर्यों के संबंध आर्य परिवारों में हों।

इसी भावना से प्रत्येक आर्य परिवारों की जानकारी हमें एक स्थान से प्राप्त हो तथा परिवारों में विवाह योग्य बच्चों की भी जानकारी मिलती रहे, इस भावना से एक पारिवारिक जानकारी हेतु पत्र प्रत्येक आर्य परिवार तक पहुंचाया जावेगा। उसे भरकर स्थानीय आर्य समाज को अथवा संभागीय जिला व तहसील अधिकारी इसे पूर्ण करने की मुख्य कड़ी रहेगें। उन्हें या सीधे सभा कार्यालय को प्रेषित करें। भेजे गए फार्म की प्रति अपने पास रखें।

एक व्यवस्था यह भी बनाई जावेगी कि सभा की ओर से घर–घर फार्म पहुंचाकर जानकारी प्रदान करने का प्रयास किया जावेगा।

# आर्य परिवार वैवाहिक जानकारी

प्रिय आर्यजन,

महर्षि ने सनातन धर्मियों की अवनति का फूट का विधर्मियों के षड़यन्त्र का कारण जाति प्रथा माना है। मनु जैसे महान दार्शनिक व सनातन धर्म मर्मज्ञ ने भी वर्ण व्यवस्था को ही स्थान दिया, योगीराज कृष्णचन्द्रजी ने भी जाति व्यवस्था को नहीं माना। इसी भावना से जाति बन्धन, मनुष्य मनुष्य के बीच ऊँच–नींच के भेद को समाप्त करने के लिए आर्य समाजों में विवाह संस्कार करवाने प्रारंभ हुए। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में ऐसे (जन्मगत जाति के बन्धन से दूर) विवाह हो रहे हैं।

ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन आदि अनेक सम्प्रदायों में जन्मगत जाति को महत्व नहीं दिया जाता और विवाह होते हैं।

यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि हम आर्यजन सैद्धान्तिक रूप से जन्मगत जातिवाद को मानते नहीं किन्तु फिर भी मानते हैं। जहां कथनी और करनी में अन्तर हो वहां सफलता नहीं मिल सकती, यह निश्चित है।

इसका दूसरा पहलू यह भी है जो दुःखद है कि आर्य परिवारों में जो संबंध हुए उनके बच्चे आर्य समाज से जुड़ गये या कम से कम दूर नहीं हुए। अन्तरजातीय विवाह उपयुक्त शब्द नहीं है जाति तो मानव मात्र की एक ही है **"दुनिया का इकरंगी आलम आत था।**

**पहले एक कौम थी इंसान जिसका नाम था।।"**

संसार में कहीं भी मानव देहधारी हो वह मनुष्य नाम से ही पुकारा जावेगा। मानव, मानव के मध्य जाति भेद हमारी ही उपज है सामाजिक व्यवस्था के गुण, कर्म के अनुसार वर्णों में विभाजित करना एक सुव्यवस्था रही है। हमें आर्य होने के नाते इसका सम्मान करना चाहिए।

शब्दों, भाषणों या नारों से नहीं, अपितु जीवन में आत्मसात कर इसे अपनावें तभी संगठन शक्तिशाली और विशाल बनेगा।

माता–पिता की विचारधारा और व्यवहार का स्वतः प्रभाव बालकों पर होता है। सिख्ख, मुसलमान, पारसी, ईसाई का बालक अपनी पैतृक विचार धारा से स्वतः जुड़ जाता है। यदि आर्य परिवारों में भी विवाह संबंध आर्यों में हों तो यहां भी वही स्थिति होगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा इस योजना को प्रारंभ कर दिया गया है दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। अपनी प्रान्तीय सभा भी इसे आगे बढ़ाये और आर्य परिवारों में संस्कार होने लगे तो एक शक्ति का संचार होगा।

अतः पाठक कृपया इस विचार का प्रचार सन्देश के रूप में प्रत्येक आर्य परिवार में पहुंचावें और सहयोगी बनें।

कृपया इच्छुक परिवार निम्न जानकारी पूर्ण कर सभा कार्यालय में प्रेषित करें, उनकी जानकारी वैदिक रवि में प्रकाशित की जावेगी।

## विवाह हेतु जानकारी।

नाम ..........................................................

पिता का नाम ..........................................

पता ..........................................................

दूरभाष या चलभाष ...................................

रंग – सांवला/गेहुंआ/गौरा

ऊँचाई ......................................................

वजन .......................................................

शैक्षणिक योग्यता ....................................

वर्तमान में – गृहकार्य/परिवार के व्यापार में सहयोग/स्वयं का व्यापार/सेवारत् पद/प्रायवेट/सरकारी

जीवन की विशेष रूची – ..........................................................................

**3 रंगीन चित्र (एक वर्ष से पहले के न हों)**

साथ में 250 रू. की राशि ताकि हर माह वैदिक रवि बताए पते पर भेजा जा सके।

# मध्य भारतीय सभा द्वारा झाबुआ आदिवासी क्षेत्र में किये गये वेद प्रचार कार्यक्रम

1. दिनांक 22/8/17 महर्षि दयानन्द आश्रम अन्तर्वेलिया सायंकाल श्री आर्येन्द्र जी द्वारा
2. महर्षि दयानन्द आश्रम थान्दला नौ दिन तक निरन्तर प्रातःकाल श्री आचार्य दयासागर जी, आचार्य दिलीप जी, आचार्य रणवीर जी द्वारा
3. दिनांक 23/8/17 ग्राम उमरादरा परनाली सायंकाल श्री चुन्नीलालजी द्वारा
4. दिनांक 24/8/17 अन्तरवेलिया प्रातःकाल श्री जगदीशजी, श्री खेमचन्द जी, श्री आर्येन्द्रजी द्वारा
5. दिनांक 25/8/17 महर्षि दयानन्द विद्यालय ग्राम बालवासा श्री दयालसिंहजी, आचार्य दयासागरजी द्वारा
6. दिनांक 26/8/17 ग्राम पंचपिपलिया आचार्य दयासागरजी, आचार्य विश्वामित्रजी, आचार्य दिलीपजी, आचार्य रणवीरजी द्वारा
7. दिनांक 27/8/17 झाबुआ शहर श्री महेन्द्रजी चोरल, श्री खेमचन्दजी, श्री आर्येन्द्रजी द्वारा
8. 27/8/17 थान्दला गणेश मन्दिर रात्रिकालीन श्री दयासागरजी, आचार्य दिलीपजी, आचार्य रणवीरजी द्वारा
9. दिनांक 28/8/17 बामनिया महर्षि दयानन्द विद्यालय दोपहर आचार्य दयासागरजी, श्री खेमचन्द जी, आचार्य धर्मवीर शास्त्री द्वारा
10. दिनांक 28/8/17 ग्राम मालफनिया रात्रिकालीन आचार्य श्री दयासागरजी, श्री खेमचन्दजी द्वारा
11. दिनांक 29/8/17 ग्राम भामल दोपहर आचार्य दयासागरजी, श्री खेमचन्दजी द्वारा
12. दिनांक 29/8/17 ग्राम कुण्डला रात्रिकालीन आचार्य दयासागरजी, श्री विश्वामित्रजी द्वारा
13. दिनांक 30/8/17 ग्राम काकनवानी प्रातः महर्षि दयानन्द विद्यालय आचार्य दयासागरजी, श्री खेमचन्द जी, श्री आर्येन्द्रजी द्वारा
14. दिनांक 30/8/17 ग्राम रम्भापुर गणेश मन्दिर रात्रिकालीन आचार्य दयासागर जी द्वारा।
15. दिनांक 31/8/17 ग्राम सुजापुरा आचार्य दयासागरजी, श्री खेमचन्दजी, आचार्य आर्येन्द्रजी, आचार्य विश्वामित्रजी द्वारा।

## भोपाल संभाग में प्रचार

16. दिनांक 02/09/17 से 06/09/17 तक आर्य समाज गंजबासौदा जिला विदिशा।

17. दिनांक 07/09/17 से 08/09/17 तक गायत्री माता मन्दिर गंज बासौदा विदिशा।

## ग्वालियर, चंबल संभाग में प्रचार

18. दिनांक 10/09/2017 श्री अजीतसिंह जी ग्राम सोंसा जिला ग्वालियर।
19. दिनांक 11/09/2017 आर्य समाज मुरार जिला भिण्ड।
20. दिनांक 12/09/17 श्री राजेशजी तिवारी ग्राम मौ जिला भिण्ड।
21 दिनांक 13/09/17 श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य ग्राम सुरपुरा भिण्ड।
22. दिनांक 14/09/17 श्री ओमप्रकाशजी आर्य ग्राम बलारपुरा जिला भिण्ड।
23. दिनांक 15/09/17 श्रो सौमित्रसिंह जी आर्य ग्राम कृपेकापुरा जिला भिण्ड।


# विजयादशमी पर्व
# की हार्दिक शुभकामनाएं

## विजय का यह पर्व आप सबके लिए मंगलमय हो।

*विनीत :*

***इन्द्रप्रकाश गांधी*** — *सभाप्रधान*

***प्रकाश आर्य*** — *सभामन्त्री*

एवं

**समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण**

**मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल**

समाचार –

# अशोक नगर ग्राम भटोली में वेद प्रचार 17 को यज्ञोपवीत प्रदान किया गया

गुना के संभागीय उपप्रधान श्री श्रीधर शर्मा एवं उपमन्त्री श्री रामवीर शर्मा के प्रयास से ग्राम भटोली में वेद प्रचार का कार्य स्थानीय हनुमान मन्दिर में आयोजित किया। सभा की ओर से आचार्य प्रभामित्र जी को वहां प्रवचन व यज्ञ हेतु आमन्त्रित किया गया था। छोटे से ग्राम में 4 घण्टे प्रचार कार्य चला जिसमें 300 से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में ही 17 व्यक्तियों को यज्ञोपवीत प्रदान किया।

पहलीबार आयोजित कार्यक्रम से प्रभावित होकर पुनः 7 दिवसीय कार्यक्रम सितम्बर माह में क्षेत्र में आयोजित किया है।

## कार्यशाला सम्पन्न

गुना संभाग में तीन माह पश्चात पुनः राधौगढ़ में कार्यशाला का आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा प्रधान इन्द्रप्रकाश जी गान्धी, इन्दौर संभाग के उपप्रधान श्री गोविन्दराम जी आर्य, उपमन्त्री डॉ. दक्षदेव जी गौड़, गुना संभाग के उपमन्त्री श्री रामवीर शर्मा भी उपस्थित थे। कार्यशाला में आस पास की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विशेष कर गुना, शिवपुरी, अशोक नगर, राधौगढ़, मुंगावली से बड़ी संख्या में नवयुवकों की उपस्थिति रही। लगभग 75 की संख्या में विभिन्न समाजों के पदाधिकारी व सक्रिंय कार्यकर्ता कार्यशाला में भाग लेने पहुंचे थे। कार्यकर्ताओं को नोट बुक, पेन और निःशुल्क साहित्य, महर्षि का कैलेण्डर भेंट किया।

समाजों के सदस्यों ने अपनी बात सुझाव व समस्या दर्शाते हुए की।

सभामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य ने आर्य समाज के इतिहास, आज की आवश्यकता, उसके प्रचार प्रसार के नये ढ़ंग, नये तरीकों से संगठन वृद्धि करने का तौर तरीका बताते हुए एक घण्टा पैंतालीस मिनिट तक निरन्तर अत्यन्त प्रभावी उद्‌बोधन व मार्गदर्शन दिया। कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं में अत्यन्त उत्साह का वातावरण बना। सभी ने और सक्रियता से कार्य करने का संकल्प लिया। संचालन मैंने किया। आर्य समाज के प्रधान श्री एकनाथ जी ने आभार व्यक्त किया।

**श्रीधर शर्मा**
उपप्रधान – गुना संभाग

# सूचना

भोपाल, महावीर नगर , आर्य समाज महावीर नगर भोपाल के निर्वाचन को दलवीर सिंह राधव को संरक्षकत्व। निरीक्षण में निर्वाचन अधिकारी श्री धर्मेन्द्र कौशल नें संपन्न कराये। निर्वाचनों में सर्वसम्मति से श्री चंद्रहास शुक्ल प्रधान एवं संदीप सोनी मंत्री निर्वाचित हुए। सभा की और से नवनिर्वाचित कार्यकारणी को हार्दिक बधाईयां........

# प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

# मानव कल्याणार्थ

## ※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू